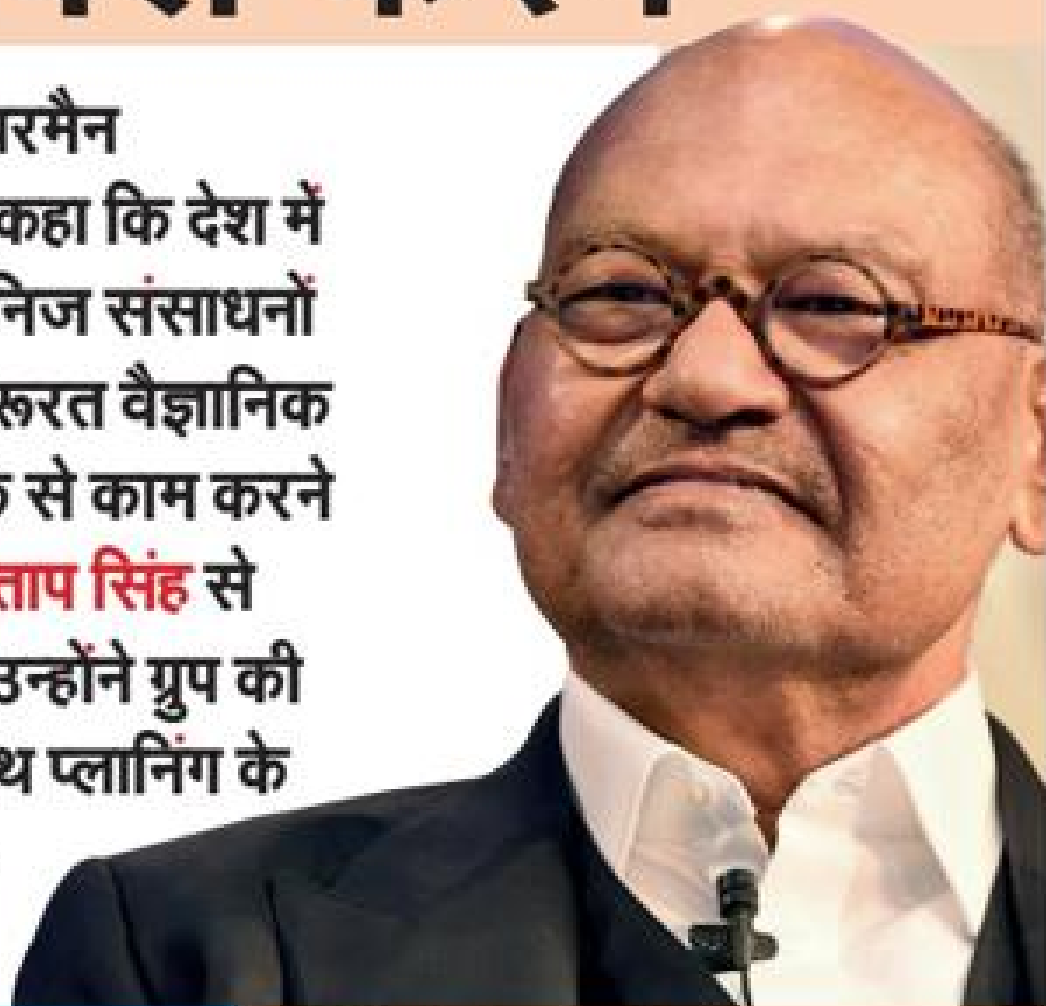


'अगले 3 साल में \$20 बिलियन का निवेश करेंगे'

वेदांता समूह के चेयरमैन

अनिल अग्रवाल ने कहा कि देश में तेल-गैस सहित खनिज संसाधनों की कमी नहीं है, जरूरत वैज्ञानिक और टिकाऊ तरीके से काम करने की है। **अखिलेश प्रताप सिंह** से विशेष बातचीत में उन्होंने ग्रुप की अगले चरण की ग्रोथ प्लानिंग के बारे में भी बताया। पेश है मुख्य अंश:



NBT इंटरव्यू

Q ग्रोथ के अगले चरण की क्या प्लानिंग है?

अगले 3 साल में हम लोग 20 बिलियन डॉलर का निवेश करेंगे। 4 बिलियन डॉलर ऑयल एंड गैस में लगाएंगे और प्रोडक्शन कैपेसिटी 3 लाख बैरल सालाना करेंगे। 10 बिलियन डॉलर एल्युमीनियम प्लांट्स में लगाएंगे और इनकी कैपेसिटी 30 लाख से बढ़ाकर 60 लाख टन करेंगे। जिंक में 50 हजार करोड़ रुपये लगाया है। जिंक में कैपेसिटी 10 लाख टन है। इसको 20 लाख टन सालाना कर रहे हैं। सिल्वर भी इसके साथ है। कॉपर में भी 50 हजार करोड़ रुपये लगा रहे हैं और इसकी प्रोडक्शन कैपेसिटी 5 लाख टन सालाना करेंगे। इसके अलावा ऑप्टिकल फाइबर पर जोर है। अभी 50 मिलियन फाइबर किलोमीटर बनाते हैं। इसको 100 मिलियन पर ले जाएंगे। हमारे सभी बिजनेस में ग्रोथ है। सबकी डिमांड है।

Q क्रिटिकल मिनरल्स पर आप क्या कर रहे हैं?

हिंदुस्तान जिंक और वेदांता ने रेयर अर्थ मिनरल्स के ब्लॉक्स लिए हैं। पैलेडियम, जर्मेनियम वगैरह जिन क्रिटिकल मिनरल्स की दुनिया को जरूरत है, ये सब हमारी माइंस में निकल रहे हैं। सरकार की सलाह भी है और हम उसको देख रहे हैं।

Q देश को बड़ी मात्रा में तेल-गैस आयात करना पड़ता है। क्या करना चाहिए?

ज्यादा से ज्यादा एक्सप्लोरेशन और युवाओं पर भरोसा। अगर कोई युवा एक्सप्लोरेशन करे, तो 5-10 करोड़ रुपये में कर सकता है। अगर उसे डिस्कवरी मिले, तो आज का सिस्टम है कि उस डिस्कवरी को सरकार को वापस देना पड़ता है। उस प्रॉपर्टी को ट्रेडेबल करना चाहिए। वह अपनी मर्जी से किसी को भी बेच सके क्योंकि उसकी लॉटरी लगी है। सरकार इसको समझ भी रही है और इस बारे में राय सुन भी रही है। एनर्जी इंडिपेंडेंस के लिए एक्सप्लोरेशन बहुत महत्वपूर्ण है।

Q आत्मनिर्भर होने के लिए और क्या होना चाहिए?

जिस तरह हम अन्न के मामले में आत्मनिर्भर बने हैं, वैसा ही धरती के नीचे के संसाधनों के बारे में होना चाहिए। हिंदुस्तान में जमीन के नीचे धन की कोई कमी नहीं है। ऑयल एंड गैस भरा हुआ है, लेकिन 90% इंपोर्ट करना पड़ता है। करीब 100% कॉपर इंपोर्ट करते हैं। बॉक्साइट पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा भारत में है, लेकिन आज भी बॉक्साइट आयात होता है। अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और यूरोप जमीन के नीचे के संसाधनों से ही आगे बढ़े। हमारे यहां जो संसाधन हैं, उनका उपयोग हो। इस दिशा में भारत बढ़ रहा है। जिसको भी आपने खदान दी, वहां से जब तक माल निकल रहा हो, तब तक लीज रहे क्योंकि बहुत बड़ा निवेश होता है। सरकार का भी फोकस इन क्षेत्रों पर है क्योंकि इनसे बड़े पैमाने पर रोजगार के मौके बनेंगे और तरक्की होगी।